M.A. Semester - IV
Philosophy DSE
Unit - I

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Ways of Salvation according to Buddhism (Part - II)

(5) सम्यक् आजीव — बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण के साधक को सम्यक् आजीव का पालन करना भी अनिवार्य होता है। इस प्रकार इस धर्म में सम्यक् आजीव को निर्वाण प्राप्ति की दिशा में पाँचवीं सीढ़ी के रूप में अपनाया गया है। 'सम्यक् आजीव' का अर्थ है शुद्ध उपायों से जीविकोपार्जन करना। बौद्ध धर्म में इस बात को बलपूर्वक स्थापित किया गया है कि साधक को अपने जीविका के निर्वाह के लिए निषिद्ध मार्गों का बहिष्कार तथा उचित मार्गों का अनुसरण कर सम्यक् संकल्प को सुदृढ़ बनाना चाहिए। स्वयं बुद्ध ने इसे एक अलग सोपान की मान्यता प्रदान की, क्योंकि उनके अनुसार जो मनुष्य सम्यक् कर्मान्त का पालन करता है, वह जीविका के निर्वाह के लिए कभी भी गलत मार्गों का अनुसरण नहीं कर सकता। अतः सम्यक् कर्मान्त को सार्थक बनाने के लिए सम्यक् आजीव का पालन करना अनिवार्य प्रतीत होता है।

(6) सम्यक् व्यायाम — बुराईयों को पैदा होने से रोकने एवं सद्धर्मों की स्थापना के लिए सतत प्रयत्नशील होना सम्यक् व्यायाम है। बुद्ध के अनुसार वासनाओं को वश में करना पुरुषार्थ है, ताकि कुप्रवृत्तियों का उदय अथवा निवास न हो सके। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि

कुप्रवृत्तियों को अपने अन्दर आने देने से रोकना तथा मानसिक संयम एवं एकाग्रता के द्वारा सुकर्मों को सुदृढ़ करना ही इसका मूल लक्ष्य है। इस सन्दर्भ में 5 उपाय निर्धारित किए गये हैं

(i) अच्छे विचारों का ध्यान
(ii) बुरे विचारों का क्रियात्मक रूप से धारण करने में उत्पन्न परिणामों का सामना।
(iii) बुरे विचारों से अपने ध्यान को अलग करना।
(iv) बुरे विचारों को उत्पन्न करनेवाली प्रेरक वृत्तियों को नष्ट करना।
(v) शारीरिक मन को वश में करना।

बुद्ध ने बलपूर्वक यह माना है कि सम्यक् पुरुषार्थ अर्थात् व्यायाम के बिना ज्ञान के प्रकाश का उद्भव सम्भव नहीं है, क्योंकि केवल इसी के बल पर क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान तथा विषय के प्रति आसक्ति का पूरी तरह से नाश होना सम्भव होता है।

(7) सम्यक् स्मृति — सम्यक् स्मृति निर्वाण प्राप्ति का सातवाँ महत्वपूर्ण सोपान है। चित्त, शरीर, वेदना तथा मानसिक अवस्थाओं को उन्हीं के रूप में स्मरण करते रहना सम्यक् स्मृति है। बुद्ध के अनुसार मिथ्या भ्रम में पड़कर हम अपने स्वभाव से वशीभूत हो शरीर, चित्त, वेदना तथा मानसिक अवस्थाओं को नित्य एवं सुखकर मान लेने की गलती करते हैं तथा उनके प्रति आसक्त हो उठते हैं। सम्यक् स्मृति के कारण मनुष्य सभी विषयों से विरक्त होकर सांसारिक बन्धनों में नहीं पड़ता। बौद्ध धर्म के अनुसार सम्यक् स्मृति के मार्ग का पालन निर्वाण के साधक को समाधि के योग्य बना देता है।

(8) सम्यक् समाधि — आष्टांगिक मार्ग की अन्तिम सीढ़ी सम्यक् समाधि है। राग, द्वेष, हिंसा, प्रतिकार के त्याग की भावना से उत्पन्न चित्त की शुद्ध तथा आलंकारिक एकाग्रता को सम्यक् समाधि की संज्ञा दी गयी है। बौद्ध धर्म में सम्यक् समाधि की चार अवस्थाएँ मानी गयी है। इन चार अवस्थाओं को प्राप्त करने के बाद ही साधक निर्वाण को प्राप्त करने में सफल होता है।

(i) प्रथम अवस्था — विचार सागर में डूबकर वैराग्य का अनुभव करते हुए परम शान्ति को प्राप्त करना समाधि की प्रथम अवस्था है। इस अवस्था में साधक शान्त चित्त होकर बुद्ध के चार आर्य सत्यों का वितर्क तथा विचार करता है। वस्तुतः यह अवस्था तर्क-वितर्क की अवस्था है। इस अवस्था में विरक्ति एवं शुद्ध विचार के कारण साधक अपूर्व आनन्द एवं शान्ति का अनुभव करता है।

(ii) द्वितीय अवस्था — विचार एवं तर्कों के जाल खत्म होने पर आनन्द की अनुभूति होना समाधि की दूसरी अवस्था है। समाधि की इस अवस्था में तर्क-वितर्क के दूर होने पर प्रगाढ़ चिन्तन के कारण चित्त की स्थिरता एवं शान्ति का उदय होता है। समाधि की इस अवस्था में आनन्द एवं शान्ति का भाव भी साथ-साथ रहता है।

(iii) तृतीय अवस्था — आनन्द के प्रति भी उदासीन हो जाना समाधि की तीसरी अवस्था है। यहाँ उल्लेखनीय है कि इस अवस्था में चित्त की शान्त अवस्था तथा उसके साथ-साथ शारीरिक सुख का भाव विद्यमान रहता है। लेकिन इन दोनों के बान रहने के बावजूद साधक

में आनन्द के प्रति उदासीनता का भाव आ जाता है।

(iv) चतुर्थ अवस्था — शारीरिक सुख एवं आनन्द दोनों ही, से विरक्त होकर पूर्ण प्रज्ञा की स्थिति को प्राप्त करना समाधि की चौथी अवस्था है। समाधि की यह अन्तिम अवस्था पूर्ण शान्ति, पूर्ण विराग तथा पूर्ण निषेध की अवस्था है। यह सुख - दुःख के भय से रहित है। इस प्रकार समाधि की इस अवस्था में दुःखों का सर्वथा - निरोध हो पूर्ण निर्वाण की प्राप्ति होती है। इस अवस्था की प्राप्ति के बाद व्यक्ति "अर्हत" की संज्ञा को प्राप्त कर लेता है।

बौद्ध धर्म द्वारा प्रतिपादित निर्वाण के इस आर्यअष्टांगिक मार्ग के बीच समाधि तथा प्रज्ञा तीन अंग है इस मार्ग के अनुसरण से निर्वाण प्राप्ति के बाद व्यक्ति में पूर्ण प्रज्ञा पूर्णशील तथा पूर्ण शान्ति का उदय होता है।

X ———————— X